कविताओं का विभिन्न गतिविधियों के
द्वारा रुचिपूर्ण और साभिनय अध्यापन

# नवोपक्रम


नाम : शुभांगी तानाजी तावरे

पाठशाला : कमला निंबकर बालभवन,
फलटण.

# शीर्षक: कविताओं का विभिन्न गतिविधियों के द्वारा रूचिपूर्ण और साभिनय अध्यापन

हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है। मातृभाषा के साथ - साथ सभी को राष्ट्रभाषा का महत्व बचपन से मतलब प्राथमिक पाठशाला से होना आवश्यक है। इसके लिए हिंदी के छोटे - छोटे गीत, कविता, कहानी, छोटे संवाद आदि को मनोरंजनात्मक, प्रभावी तरीको द्वारा सीखाकर रूची बढ़ाई जा सकती है।

कविताओं का हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। कविताओं से मन आनंदी होता है कविता का संबंध मन से है, मन के पोषण के साथ कल्पनाशक्ति और बुद्धि का भी पोषण होता है। कविता हमारी भावनाओं को जगाती है, उन्हें सँवारती है। पत्तों की सरसराहट, चिड़ियों की चहचहाहट, रिमझिम बारिश, लहराते खेत, दुःख, पीड़ा, प्रेम, आँसू आदि को समझना और इनसे अपने को एकाकार करना कविता है। कविता के द्वारा मानवीय गुणों के विकास में मदद होती है। कविता संगीत पर झूमने, दुःख कम करने, स्वावलंबी बनाने, प्रकृति प्रेमी बनाने, देशप्रेम जगाने आदि के लिए है। साथ ही यह इनसान को बनाने में महत्वपूर्ण स्थान निभाती है।

किसी कवि ने ठीक ही कहा

है कि -

"गूँगे केरि सरकरा खाय और मुस्काय।" यानी कविता गूँगे व्यक्ति की शक्कर है जिसे वह खाता है, आनंद लेता है, लेकिन इस आनंद का वर्णन नही कर सकता बस मुस्कराकर रह जाता है। इसी महत्व को जानते हुए पाठ्यक्रम में भी 30% पाठ्यक्रम कविताओं पर आधारित है।

**मैंने यह विषय क्यों चुना? और विषय की तैयारी:**

छात्रों की मराठी भाषा मातृभाषा होने के बावजूद उन्हें मराठी की कविताएँ याद नही होती है, फिर हिंदी तो द्वितीय भाषा होने के कारण कठिन लगना स्वाभाविक है। कविताएँ पढ़कर, सुनकर सहज याद नही होती थी। अधिकांश बच्चों को कविता सिरदर्द, नीरस लगनेवाला भाग है। एक ही जगह पर बैठकर कविता बोलना सीखना वही पुराना घीसा-पीटा पैटर्न से उनमें रूचि का पूर्ण ही अभाव दिखाई दिया कविता पढ़ाते समय भी ध्यान नही होता था ऐसा कई बार प्रतीत हुआ। कविता पर प्रश्न, पंक्तियाँ, रिक्त स्थान पूछने पर वे सहमें, घबराए लगे बच्चों को कविता की पंक्तियाँ याद नही थी। इसलिए उपाय के तौर पर

सोचा कि बच्चों के मन से घबराहट दूर करना जरूरी है, साथ ही वे रूचिपूर्ण, मन लगाकर उत्साह से सीखें इस ओर ठोस उपाय करना चाहिए इसलिए नियोजन कर तैयारी शुरू की।

मेरे उपक्रम के लिए कक्षा सातवीं के विद्यार्थियों को जो 12-13 साल के आयु समूह के है को लिया क्योंकि इस आयु समूह के बच्चे संवेदनशील, संस्कारक्षम होते है। इसलिए उनमें राष्ट्रभाषा के प्रति प्रेम, देशप्रेम, प्रकृतिप्रेम, साक्षरता अभियान, अंधश्रद्धा निर्मूलन, स्वाभिमान, परिश्रम का महत्व, वृक्षारोपण, पर आधारित कविता के माध्यम से भी बच्चों पर योग्य संस्कार, प्रेम, आदर, निष्ठा आदि के बारे में सजग करना है। ऐसी अनेक संस्कारक्षम कविताओं का भरण-पोषण किया तो, हिंदी भाषा का विकास, रूचि बढ़ाने में अवश्य ही मदद मिलेगी।

मैंने कक्षा सातवीं की पाठ्यपुस्तक की कविताएँ जिसमें "आगे बढ़ते जाएँगे", "चिड़ियाँ", "राहे नई बनाएँगे" "सूरज लाने जाना है" आदि कविताएँ भी। कविता (पाठ-1) "आगे बढ़ते जाएँगे" इसमें देशप्रेम, प्रगति के लिए किसी भी परिस्थिति में कटिबद्ध होकर देशसेवा करने की प्रतिज्ञा बच्चे कर रहे हैं। इस कविता

जो ए मेरे वतन के लोगों जरा आँख में भर लो पानी" इस फिल्मी गाने पर धून (चाल) लगाई। चिड़ियाँ इस पाठ की कविता को पढ़ने से ज्ञात होता है कि यह स्वाभिमान सीखानेवाली और स्वच्छंदता का महत्व बता रही है। "राहें नई बनाएँगे" इस कविता में वृक्षारोपण, साक्षरता (पढ़ाई-लिखाई) का महत्व आतंकवाद को मिटाना आदि के बारें में बताया है, को चुना। आयु समूह अनुसार पूरक कविताएँ चुनकर उसपर भी धून लगाना, समानार्थी, विरूद्धार्थी, अनेकवचन, पहेली आदि कविताओं से चुनकर लिखना फिर उत्तर के लिए प्रोत्साहित करना। साभिनय इनपर काम करने की योजना बनाई ताकि बच्चे कविताओं में रस ले और देशप्रेम, मानवता के प्रति, साक्षरता के प्रति सजग रहे।

यह विषय चुनने का एक कारण यह भी था कि बच्चों पर पढ़ाई का बोझ बहुत है। हर विषय का बहुत अभ्यास होता है। परंतु बच्चों का मन खेल खेलने, कूदने-फाँदने, मारामारी, शोरगुल आदि में ज्यादा होता है उसमें उनके पीछे पढ़ाई का बोझ पठन, लेखन, रटना, गृहपाठ, गणित, विज्ञान के सूत्र याद करो, अंग्रेजी की स्पेलिंग्स याद करो, हिंदी

मराठी में कविताएँ आदि याद करना पड़ता है इसलिए सोचा कि विद्यार्थियों का 'कविता याद करो, याद करो' का बोझ कम करके पाठ्यपुस्तक के इस प्रकार के कठिन भाग को कृतिशीलता की जोड़ देकर प्रात्यक्षिकें, समूह कार्य, अभिनय, शैक्षणिक साहित्य जैसे टेप की कविताओं की कैसेट, चार्ट, तख्ता, शब्दकोष वादन हस्तपुस्तिका आदि की सहायता लेकर विद्यार्थियों को नीरस लगनेवाली, तनावग्रस्त लगनेवाली पढ़ाई मनोरंजक सीरव, उत्साह देनेवाली निश्चित होगी। साथ ही हिंदी की कविताएँ जून-जुलाई में याद होने से परीक्षा के समय तनाव कम महसूस करेंगे। बाकि विषयों के लिए समय ज्यादा दे सकेंगे।

* (इस साल के दसवीं के विद्यार्थियों की हिंदी पूर्ण विषय की सारी कविताएँ इस उपक्रम के आधार पर धून लगाकर कंठस्थ कराई तो उन्हें जुलाई माह में सारी की सारी याद थी।) शुरू में ही कविताओं का अध्यापन करा देने से खाली समय में, या एक घंटा खत्म होने और दूसरा घंटा शुरू होने के बीच के समय जब दूसरे शिक्षक आनेवाले होते है उस समय बच्चे कंठस्थ की हुई कविता बोलेंगे तो कच्चे बच्चों को फायदा होगा ही साथ ही

कक्षा में शांतता के साथ धीमी आवाज में बच्चों द्वारा कही कविता सुनना भावविभोर करेगा।

कई बार देखा गया है कि पढ़ाई में पीछे पड़े बच्चों (कच्चे बच्चों) को फिल्मी गीत याद रहते हैं, नए-नए फिल्मी गाने तुरंत याद हो जाते हैं। इसका मुख्य कारण कि रेडियो पर, टी.वी. पर वे गाने सुनते-देखते हैं। उन गानों के बोल बार-बार कानों पर पड़ते हैं, दृष्टिक्षेप होते हैं और अनायास ही याद होते चले जाते हैं। इसलिए इस बात पर गौर किया और हिंदी कविताओं की धुन लगाकर टेप कर केसेट बनाने का सोचा। क्योंकि बाजार में अंग्रेजी की कविताओं की केसेट सुलभता से मिलती है पर हिंदी पाठ्यपुस्तक की कविताओं की सुंदर धुन-लय बद्ध की कविताओं की केसेट फिलहाल दुर्लभ है। टेप की केसेट बार बार सुनकर अभिनयसहित सीखे तो जल्दी ग्रहण होगी।

कारण सामान्य व्यक्ति आँखों से देख सकता है, कानों से सुन सकता है, जीभ से स्वाद अनुभव करता है, नाक से सुगंध और त्वचा से स्पर्श अनुभव लेता है। अतः विद्यार्थी जो ज्ञान प्राप्त करता है उसमें से आँखों द्वारा ८३%

कान दृवारा 11%, जीभ और त्वचा दृवारा ध्वनि का ज्ञान प्राप्त करता है। इस प्रकार आँख और कान इन इंद्रियों से मिलनेवाला ज्ञान सबसे ज्यादा होने से छात्रों के सामने अन्य गतिविधियों के साथ-साथ दृक-श्राव्य साधन का उपयोग और अभिनय दृवारा सीखना आसान होगा। दूसरी बात विद्यार्थियों को समझाकर, स्वतंत्रता-पूर्वक कोई काम सौंपे तो वे उत्तरदायित्व अच्छी तरह निभाते है। इसलिए 6-6 बच्चों के समूह बनाकर उन्हें कविता से संबंधित काम सौंपे। तैयारी का नियोजन। जिसमें कविता प्रत्येक बच्चे को याद हो, रूचि बढ़े इसलिए प्राथमिक रूप से पहले यह किया -

1) कविता का सस्वर वाचन और एक्शन के साथ प्रयत्न-

कविता का प्रभावी रूप से वाचन (पठन) होने पर चाहे प्रभावी रूप से (रीति से) अभिनय हो, चाहे साधारण रूप में अभिनय, एक्शन हो विद्यार्थियों से कराने के बारें में सोचा। अन्य गतिविधियों की मदद, अभिनय की जोड़, कविता का अध्यापनकार्य प्रभावशाली, मनोरंजक, ज्ञानवर्धक, दीर्घकाल तक याद रहनेवाला निश्चित ही होगा। साथ ही एक-ही जगह पर बैठकर गाते रहने की अपेक्षा उठकर हलचाल करने को मिलतो है, इसलिए विद्यार्थी आनंदीत भी होंगे और पूरे मन से

भागीदारी निभाएँगे ही।

ii) पूरक कविताएँ इकट्ठा करना, कविता बनाना -

इसके लिए पहले पूरक छोटी-छोटी कविताएँ चार-चार पंक्तियों की पढ़कर बताना उन सभी विद्यार्थियों से ही अर्थ पूछना जैसा बताए उन्हें इसके लिए प्रोत्साहित करना। बाद में पाठ्यक्रम की कविता पढ़ना। कविता का अर्थ, आशय समझाना, बीच-बीच में प्रश्न करना या प्रश्न करने कहना, शंका पूछने का मौका देना जिससे कविताओं के प्रति उत्साहपूर्वक पढ़नेवाला समूह तैयार करना है।

iii) हस्तपुस्तिका, प्लेकार्ड्स (खेल के पत्ते) बनवाना -

पाठ्यपुस्तक में दी कविताओं की पूरक कविता बनाना, लायब्रेरी से ढूँढ़ना, समूह में काम बाँटना, रंगाना, लिखाई आदि। कविता के कुछ शब्द चुनकर उसके समानार्थी, विरुद्धार्थी, वचन, स्त्रीलिंगी शब्द पुल्लिंग में बदलना, पहेली तैयार करना, कविता पर कहानी लिखवाना। कुछ शब्दों के मराठी, अंग्रेजी शब्द भी लिखने, खोजने कहना।

इससे किस प्रकार के बदल अपेक्षित है ?

समूह में सहविचार से, स्वानुभव स्वयंकृति, साभिनय से खेल द्वारा भी ली गई शिक्षा आनंददायी शिक्षा होगी क्योंकि इससे विचारशक्ति बढ़ेगी, डर निरूत्साह कम या दूर होगा। स्वयं या सहपाठियों के साथ मिल-जुलकर काम करने की आदत लगेगी। आत्मविश्वास बढ़ेगा। स्वयंअध्ययन कैसे किया जाता है निश्चित ही कुछ विदयार्थियों को समझेगा। इसके साथ ही निम्नलिखित बदल विदयार्थियों में अवश्य होंगे।

१) इस उपक्रम के अनुसार कविताओं के पाठ लेने से सिर्फ शिक्षकों ने बोलना और बच्चों ने शांत बैठकर सुनना इस प्रकार की शिक्षा पद्धति इसमें न होकर इस उपक्रम के अनुसार पढ़ाने पर इस प्रक्रिया में दोनों ही सहभागी होंगे इससे बच्चों की प्रगति के साथ-साथ उनके व्यक्तित्व पर भी अच्छा प्रभाव पड़ेगा। उदाहरणार्थ : जिन विदयार्थियों की आवाज अच्छी है, अभिनय सुंदर है या चित्रकला अच्छी है, तो वह सब की वाह वाही लेगा जो भविष्य में उपयोगी होगी। संकोची वृत्ती के बच्चे भी समूह में बोलेंगे या काम पूरा करके देने में मदद माँगेंगे, बोलेंगे। इस

प्रकार जिज्ञासावर्धक आनंददायी शिक्षा होगी। उदाहरण - इस उपक्रम के चलते एक कविता "प्यारा भारत वर्ष हमारा एक कुटुंब विशाल, पृथ्वी पर इस महादेश की कोई नही मिसाल" पर नियोजन चल रहा था समूह में सभी बच्चे अलग-अलग राज्यों के पेहनावे कोई पंजाबी, कोई महाराष्ट्रीयन, मुस्लिम, राजस्थानी आदि का पहनावा करने वाले थे और उस-उस राज्यों की जानकारी संकलित करने का काम चल रहा था तभी एक लड़की ने कहा "बाई मैं दक्षिण की तरफ का पहनावा करूंगी, जैसा कि कुचीपुडी नृत्य में होता है और बीच में खड़ी रहूंगी", सभी को उसकी बात जंची मैंने भी शाबाशी दी। पर उसका पहनावा वो गोल-गोल घेरे का लंबा स्कर्ट, मुखौटा कहाँ से लाए! यह प्रश्न पड़ा। एक छात्र ने कहा चलो ग्रंथालय से किताबों से ढूंढते है एकदम परफेक्ट जानकारी। पूरा समूह गया और देखते ही देखते मुखौटा तैयार कर, जानकारी संकलित कर आए और काम शुरु किया। इ

इस प्रकार उनकी जिज्ञासा बढ़ने में योग्य दिशा मिली।

२) भाषा विषय के प्रति आत्मविश्वास संपन्न, समूह में ।जिम्मेदारी से काम करनेवाले विद्यार्थी तैयार होंगे।
३) एकाद कठिन विषय को, नीरस विषय को किस प्रकार से मनोरंजक करके आसान और रुचिपूर्ण बनाने की तकनिक समझने-वाले विदयार्थी होंगे।
४) मदद, सहकारवृत्ती, बौद्धिक, शारीरिक, मानसिक क्षमता बढेगी।
५) दूसरे समूह से, अपने समूह की तुलना करेंगे और अपने समूह का काम दूसरे समूह की तुलना मे अच्छे से अच्छा हो इस ओर प्रयत्नशील रहेंगे यदि गलतियाँ की तो सुधारेंगे।

इस प्रकार बच्चों में आमुलाग्र बदल होगा। साचेबद्धता कम होकर बच्चों का आत्मविश्वास उत्साह, सहभाग (भागीदारी) रूचि बढेगी, भाषा प्रेम बढेगा। अतिरिक्त वाचन के प्रति रूचि निर्माण होगी। आनंददायी वातावरण में मनोरंजक रूप से किया हुआ अध्ययन उत्साहदायी होगा। किया काम मन में बसेगा और दीर्घकाल तक टीकेगा।
६) इस प्रकार कविता का अध्ययन सिर्फ पाठशाला - किताबें तक ही मर्यादित न होकर हँसते- खेलते, गाते पढेंगे।

## मेरे उपक्रम की विशेषता क्या है?

विदयार्थियों को कविताओं का महत्व बताते समय यह बताया कि हिंदी गीत, गानों, कविता से लोगों में राष्ट्रीय प्रेम, मानवतावाद, गाँधीवाद, आदर्श, राष्ट्रभक्ति संवेदना, विश्वबंधू, एकता आदि की सक्षम भावाभिव्यक्ति हुई थी। राष्ट्रप्रेम की प्रखर भावना हिंदी में ही जाग उठी थी इसलिए कवि कहते है कि -

"जिस भाषा में भरा, सँस्कृति का मकरंद,
उस 'हिंदी' में हम रचे, राष्ट्रभक्ति, मानवता
एकता के छंद।"

इस प्रकार विदयार्थियों को कविता का आशय समझा तो बहुत उपयोगी होती है यह बताया। 12-13 साल के आयु समूह के बच्चों का झुकाव टीव्ही. टेप रिकार्डर पर गाने सुनना, नई-नई फिल्मों को देखना उसके गाने गुनगुनाना, मित्रों के साथ बातें करना घूमना इस ओर ज्यादा होता है अतः सोचा कि यदि बच्चों का झुकाव गुनगुनाने, गाना गाने में है, तो क्यों ना कविता में रूचि बढ़ाने के लिए कविता को संगीतमय, नृत्यमय करके सीखाए जाए इसलिए देशभक्ति, खेत-खलिहानवाले दृश्यों के गानों के साथ ही नई-

नई फिल्मों के अच्छे - अच्छे गानों का सूर, लय-धून लेकर कविता सिखाई जाए जिससे बच्चे आनंद ले सके। इस प्रकार से कविता का अध्ययन लेने से बच्चे खाली समय कविता गुनगुनाते देखे गए। अगली कविता पढ़ाने से पहले ही बच्चे नियोजन करके रखते थे कि आज बाहर पाठशाला परिसर में या प्रार्थना हॉल स्टेज पर यह कविता का अध्ययन करेंगे वगैरह या फिर कहते थे कि आज पूरक कविता गाने बोले क्या? या कार्ड्स वाला खेल लो। प्रत्येक हिंदी के घंटे में वे स्वयं इच्छा से एक कविता बोलने का आग्रह करते और मिलकर कहते भी।

हस्तपुस्तिका तैयार करते समय समूह अनुसार काम में मग्न रहते देखे गए कुछ विद्यार्थी ४-४ पंक्तियाँ करते तो कुछ वाचनालय में हिंदी किताबों को टटोलते, पढ़ते दिखाई देते थे। पूरक कविता पढ़ते समय यदि कोई कठिन शब्द आया तो शब्दकोष से शब्दों का अर्थ देखना, शिक्षक से बातचीत करके कविता को कैसे आगे बढ़ाया जाए इस ओर विचार- विमर्श करने लगे। जिन्हें कविता करना नहीं जम रहा था वे बीच- बीच में अन्यों की मदद करते। तबला - पेटी, टेप की व्यवस्था करना, हस्तपुस्तिका में रंगाने का काम करना, नक्षीकाम करना

फ्लेकार्ड्स में समानार्थी, विरूद्धार्थी शब्द, वचन, लिंग स्त्रीलिंग का पुल्लिंग शब्द लिखना आदि काम करते। वे समूह अनुसार समूह में दिए काम बड़ी दिलचस्पी और अनुशासन से करते थे। अपने स्तर पर सुझाव देना, सलाह मसलत करना, अपने समूह का काम अच्छे से अच्छा हो इस ओर प्रयत्नशील रहते थे।

इस प्रकार पढ़ाई में कुछ कच्चे (पीछे पड़े) बच्चों से लेकर होशियार बच्चों तक सभी का उत्साहपूर्ण सहभाग इस उपक्रम की विशेषता है। साथ ही कई अच्छे परिणामकारक सकारात्मक बदल दिखे।

**उपक्रम के उद्देश्य :**

1) विद्यार्थियों में कविताओं के प्रति रूचि बढ़ाना।
2) कविता के कठिन शब्दों जैसे निर्भय विचरण, बंजर आदि और कविता के प्रति डर, निरूत्साह था वह दूर करना।
3) विदयार्थी कविता की चाल (लय) लगाकर साभिनय, खुलकर कविता बोले, चर्चा कर सके, सहपाठी के साथ पूरे मन-से बिना डरे भागीदार हो और उसका आनंद ले इस ओर प्रयत्न करना।

४) पाठ्यपुस्तक की कविताओं के अतिरिक्त पूरक कविताएँ इकट्ठा कर या कविता बनाकर हस्तपुस्तिका बनवाना और रूचि बढ़ाना / ज्ञान बढ़ाना

५) देशभक्ति कविताएँ, गाने, सामाजिक समस्याओं परक, प्राकृतिक सौंदर्य पर आधारित जैसी कविताएँ सीखाकर बालक-पालक में देशप्रेम, प्रकृति प्रेम बढ़ाना। साथ ही सामाजिक अच्छाईयों, सामाजिक बुराईयों के प्रति सजग और जागरूक करना है।

६) विद्यार्थियों के सुप्त गुण प्रकाश में लाना।

७) विद्यार्थियों को समूह में काम करने जैसे कविता का सामूहिक पठन, सस्वर गाना, धून लगाना, स्वयं-अध्ययन, कविता को किस तरह लिखित और मौखिक रूप से किस तरह प्रस्तुत करना है? यह सोचने, प्रयत्न करने कहना कारण स्वयं प्रयत्न से ली शिक्षा दीर्घकाल तक स्मरण रहती है।

८) कविता कंठस्थ करा लेना। कविता का सार, आशय का आकलन हो रहा है या नही यह भी जानना।

९) स्वतंत्र और आनंददायी वातावरण रखना।

१०) इस तरीके से सिखने से मराठी की कविताओं को सीखते समय भी लाभ होगा।

11) विद्यार्थियों को स्वयं निरीक्षण, वाचन, प्रस्तुतीकरण करने, दूसरे समूह से अपने समूह, अपने स्वयं के कार्य करने (कार्य पद्धति) की तुलना करने जैसे कार्य से आत्मविश्वास बढ़ेगा।

12) राष्ट्रभाषा के प्रति प्रेम बढ़ाना।

13) अंताक्षरी, खेल द्वारा शब्द, वाक्य, गीत भंडार बढ़ाना। उदाहरणार्थ : शब्दों के खेल (जैसे 'ंगे' अंतवाले शब्द कौन ज्यादा लिखता है या शब्द के अंतवाले अक्षर से नया शब्द अगले ने बोलना आदि।)

14) प्राकृतिक, सामाजिक समस्याओं को लेकर कविता के लिए विषय देना।

15) प्रथम सत्र के शुरू में ही सारी कविताएँ कंठस्थ, शुद्धलेखन सहित तैयारी कराना ताकि परीक्षा के समय यह बालमन टॅन्शन न लेकर (रिलेक्स) तनाव-मुक्त महसूस करे।

- **मेरे उपक्रम से किसे क्या-क्या साध्य होगा? कैसे?:**

मेरे इस उपक्रम के लिए कक्षा सातवीं के विद्यार्थी है। कक्षा पाँचवीं से लेकर दसवीं के विद्यार्थियों, पढ़ाई में कच्चे, शर्मिले, संकोची स्वभाव के, अनुशासनहीन शरारती बच्चों के साथ-सा

होशियार बच्चों को भी लाभ होगा। इनके साथ ही संस्कारक्षम आयु समूहवाले, संवेदनशील मनवाले उत्साही पढ़ाई में कच्चे बच्चों को योग्य दिशा, प्रोत्साहन दिया गया तो वे कविता याद नही होती, बोर है, कठिन है आदि बोलना भूल जाएँगे और नीरस कविताओं को दिलचस्प बनाने की तकनीक आत्मसात करेंगे। उपक्रम के दौरान बच्चों को आती, जाती हँसती उड़ती बहती, सोती, रोती जैसे शब्द देकर ४-४ पंक्तियाँ करने में मदद की (बच्चों ने की कविता की पंक्ति)

"तितली रानी आती, पल में उड़ जाती,
आती - जाती तितली, सबको है हरषाती।"

वे बच्चें आत्मविश्वासपूर्वक समूह में कविताओं को बढ़ाने में लगे थे। खाली समय में, महयाँह्न में ग्रंथपाल से कठिन शब्दों का अर्थ पूछते हुए, शब्दकोष की मदद लेते देखे गए। हमेशा नाक की सीध में चलनेवाले पैटर्न (पद्धति) से हटकर अपने बच्चोंकोकलानुसार, मानसिकतानुसार अभ्यास को प्रोत्साहन देनेवाले अभिभावक भी बहुत खुश होंगे। इससे उनके अन्य विषयों के अध्ययन की प्रगति भी दिखेगी ही।

कक्षा के 20% प्रज्ञावान विद्यार्थी, 60%

मध्यम स्तर के विद्यार्थी और बाकी बचे 20% कच्चे (पढ़ाई में पीछे) विद्यार्थी ऐसी अलग-अलग क्षमताओं के विदयार्थी भी इस रीति से पढ़ने पर आनंदीत, उत्साही और ज्यादा होशियार होंगे।

**कार्यवाही:** यह उपक्रम शुरू करने से पहले मुख्याध्यापिका को इसकी जानकारी दी कि मेरा विषय कविताओं के अध्यापन पर है और इसके लिए मैंनें कक्षा सातवीं को चुना है। इसमें पाठ्यपुस्तक की कुछ कविताएँ, पूरक कविताएँ, कुछ हिंदी देशभक्ति, प्रकृति पर आधारित गीत लिए हैं। इस उपक्रम के लिए लगनेवाला समय कुल होनेवाला खर्च, अन्य अध्यापकों की, विद्यार्थियों की मदद आदि के बारें में चर्चा कर अनुमति ली।

पाठशाला की ग्रंथपाल और उनसे समय-समय पर लगनेवाली संदर्भ किताबें, दूसरी पत्रिकाएँ, टेप रिकार्ड, कॅसेट, प्रोजेक्टर, स्लाइड्स आदि के लिए भी अनुमति माँगी। अभिभावकों से भी इस बारें में चर्चा की।

कार्य शुरू करते समय सातवीं कक्षा के विदयार्थियों के सम-विषम करके दो समूह बनाए इसमें एक समूह को नाम दिया - प्रायोगिक समूह - 'अ' और

दूसरे समूह को नियंत्रित समूह - 'ब' यह नाम दिया। जिन कविताओं का अध्यापन करना था इस उपक्रम के लिए उन कविता पाठ की सूची बनाई जो इस प्रकार है:

1) आगे बढ़ते जाएँगे
2) चिड़ियाँ 3) मेवे फलते श्रम की डाल में
4) सूरज लाने जाना है
5) राहें नई बनाएँगे
6) कोई नही मिसाल

पूरक कविता और गाने:

1) वंदेमातरम् 2) फिर भी दिल है हिंदुस्तानी
3) जहाँ डाल-डाल पर सोने की चिड़ियाँ करती है बसेरा, वह भारत देश है मेरा
4) आओ बच्चों तुम्हें दिखाए झाँकी हिंदुस्तान की
5) मेरे देश की धरती सोना उगले, उगले हिरे-मोती
6) तड़-तड़-तड़-तड़ बड़म-बड़म बादल है या एटमबम
7) ये देश है वीर जवानों का.

प्रायोगिक समूह के लिए नियोजन करना -

इसके लिए कौन-कौन सी कविता पहले लेना यह सोचा कौनसी बाहर मैदान या प्रार्थना हॉल में ले सकते हैं यह देखा। कविताओं की धून (चाल) लगवाकर कक्षा आठवी के और सातवीं के विद्यार्थि

से ) देखी । खेल कार्ड्स तैयार किए आदि ।

कविता विद्यार्थियों के समीप लाने का प्रयत्न निम्नलिखित तरीके से किया :

1) कविता को पढ़कर सभी के सामने सुनाई। अर्थ समझाया प्रायोगिक समूह को साभिनय और विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से सीखने के लिए कक्षा से बाहर भेजा। कॅसेट देकर जिसमें बच्चों के आवाज में पहली कविता टेप थी प्रेक्टिस करने कहा। पहले मन-ही-मन दो-तीन बार कविता पढ़ने के लिए कही फिर मिलकर सस्वर गाने कहा। उन्हें समझाया कि कविता मन से बोली तो ही उसका आनंद मिलेगा। कुछ छात्रों का कहना था हमारी आवाज मोटी है उन्हें समझाया जैसी भी आवाज है वैसी आवाज में खुलकर बोलो। कविता पढ़ाते समय शांत वातावरण जरूरी है। सभी को विश्वास में लेकर योग्य रीति से काव्य वाचन करने से बच्चों के मन में उस कविता का वाच्यार्थ आसानी से होता है। कविता के सुयोग्य पठन से उसका शब्दरूप प्रकट होगा ही इसके साथ अर्थग्रहण में भी मदद होगी। शुरू-शुरु में बच्चें अच्छे-से गा नही पाते है पर ४-५ बार बोलने पर वे अच्छा गाने लगते है। उनका सहभाग बढ़ता है।

कविता का आशय क्या है यह

समझाना वह आशय सभी को समझे इसके लिए अनुकूल माध्यम कौन-से है ? यह देखा जैसे - शब्दकोष , टेप , चार्ट, प्रोजेक्टर , हस्तपुस्तिका , खेलकार्ड्स । कोई कविता प्रकृति पर आधारित है तो वह चित्रों सहित लिखकर तख्ता तैयार करना वह तख्ता कविता पढ़ाते समय कक्षा में लगाना । उदाहरणार्थ : कक्षा आठवी की पहली कविता पढ़ाते समय मैंने उड़ते पक्षी , झरने , पर्वत फूल-पेड़ , आसमान , पहाड़, समुद्र आदि के चित्रों को काटकर प्रकृति की सुंदर महिमा को दिखाया कविता की पंक्तियों के आगे वह चित्र लगाए। इसी प्रकार कक्षा ७वीं की कविता

"गहरे- गहरे खड्ड निराले , ऊँची पर्वत माला
हर चट्टान बोलनेवाली , हर कोना हरियाला - - - सरिताएँ - - -
आठों पहर दिया करता है पहरा हिंदुस्तान - - - "

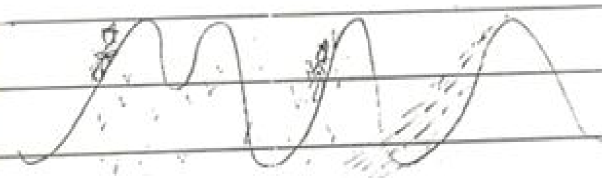

इस कविता को पढ़ाते समय श्यामपट पर उपरोक्त चित्र के माध्यम से बता सकते है कि गहरे खड्ड , ऊँची पर्वतमाला , चट्टान से निकली नदी (सरिताएँ ), हरियाली और शत्रुओं को मारने के लिए भारत के जवान दिन-रात चट्टानों पर पहरा दे रहे है । आदि ।

प्रश्नोत्तर पद्धति से कविता को स्पष्ट किया । जननी की जय-जय गाएँगे, हम आगे बढ़ते जाएँगे ।" इस कविता को गाते समय जोश के साथ गाना जरूरी है । इसे "ए मेरे वतन के लोगों, जरा आँख में भर लो पानी" इस फिल्मी गाने की (चाल) धुन लगाई । कविता गाते समय बच्चों को खेल मैदान पर धूप में सँचलन करते हुए गाने कहा । यह गाते समय उनमें देशप्रेम की भावना और अभिमान का भाव था।

कक्षा में आने पर 'एँगे' अंतवाले शब्द लिखने कहे । प्रत्येक से 'एँगे' अंतवाले शब्द का वाक्य बनाने कहा । जैसे- हम टहलने जाएँगे । आदि

शब्दों के अर्थ समझाना - कविता के कुछ कठिन शब्द आसान तरीके से समझाएँ । जैसे कविता 'चिडियाँ' पढ़ाते समय बच्चों को इमारत से बाहर पेड़ के नीचे पढ़ाई । कविता इस प्रकार है - "पीपल की ऊँची डाली पर

बैठी चिड़ियाँ गाती है ---। (किताब के 13वे पन्ने पर)

इसमें पढ़ाई में कच्चे बच्चों को डाली का अर्थ मालूम नही था । पेड़ की डाली का मतलब बताया टहनी, शाखा, डंगाल आदि । मराठी, अंग्रेजी में क्या कहते यह पूछा साथ ही बाहर पड़े पत्थर, ढेले, कंकड में फरक पूछा । कविता में आए आसमान, घर आदि का समानार्थी, विरूद्ध शब्द, एकवचन, अनेकवचन पूछे । ५-५ समानार्थी, विरूद्धार्थी

शब्दों के खेल कार्ड्स तैयार कराए। चिड़ियाँ पर अन्य लिखी कविताओं का जिसमें पूरक कविता और मन से बनाई कविताओं को एकत्र करके एक संकलन तैयार करने कहा और उस संकलन का नाम 'चिड़ियाँ' रखा। (यह हस्तपुस्तिका भेजी जा रही है) सभी छात्रों को शाम या सुबह की बेला में किसी बगीचे या घर के आसपास बोली सुनने को कहा और चिड़ियों की बोली उनकी गतिविधियों का जो अवलोकन किया वह कक्षा में सुनाने कहा। पाठ्यपुस्तक की इस कविता को फिल्मी गाना 'फिर भी दिल है हिंदुस्तानी' इस गाने की धून लगाई। जो सुनने में बहुत ही अच्छी, कर्णप्रिय लगती है। इस कारण छात्रों को तुरंत कंठस्थ हो गई।

कविता का पठन कविता के भावार्थ अनुसार हो। कुछ कविता जैसे - देशभक्ति, अंधश्रद्धा, सामाजिक बुराईयों को दूर करने की प्रतिज्ञा करते बच्चें इस प्रकार की कविता पढ़ते समय जोश के साथ गाने कहा। जो प्रार्थना रूपी कविता जैसे - "जब बहुत सुबह चिड़ियाँ उठकर
कुछ गीत खुशी के गाती है - - -
हे जग के सिरजनहार प्रभो
तब याद तुम्हारी आती है।" (माइनमाइन कीचाल)
इसे गाते समय धीरे, तरल और

और समर्पित भावना से तल्लीन होकर गाया तो ही विद्यार्थी समरस होंगे। प्रायोगिक समूह में कुछ उपसमूह (४-५ छात्रों के) बनाए और हस्तपुस्तिका बनाने के विषय और अन्य गतिविधियाँ जैसे - मुखपृष्ठ बनाना, रंगाना आदि काम सौंपे। इस दौरान देखा गया कि विद्यार्थी सुंदर क्षमतानुसार काम कर रहे थे। बैठे फलते श्रम की डाल पर यह कविता स्वयं अध्ययन के लिए दी कि उपरोक्त कविता पढ़ो, अर्थ लगाओ जो कठिन शब्द है वह शब्दकोष या मध्यांतर में आकर पूछो। फिर ६-६ बच्चों के समूह बनाकर अपने स्तर पर अभिनय के साथ प्रस्तुत करने कहा। कई बार आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन किया। विद्यार्थियों ने समय-समय पर कक्षा में, हिंदी दिन पर उत्साह से भागीदारी निभाकर प्रस्तुत की -

जैसे : "हम बच्चे आजाद देश के

"आँधी से टकराएँगे ------ खिलाएँगे।

सच की जय-जयकार करेंगे

हर प्राणी से प्यार करेंगे

कैसा भी संकट आ जाएँ

उससे हरगिज नही डरेंगे।"

इस कविता के प्रस्तुतीकरण के समय गाँधीजी के तीन बंदर बुरा मत बोलो, बुरा मत सुनो, बुरा मत देखो का अभिनय किया। कैसा भी संकट आ जाए के समय एक

समूह ने आग लगी तो डरकर न भागकर उपाय दिखाए तो एक समूह ने लड़ाई पर जाने का दृश्य दिखाया। तीसरे समूह ने रास्ते में दुर्घटना का दृश्य पर उपाय दिखाते हुए सुंदर तरीके से प्रस्तुतीकरण किया

(कविता - 2) "कोई नही मिसाल" इस कविता के बोल हैं

प्यारा भारतवर्ष हमारा, एक कुटुंब विशाल
पृथ्वी पर इस महादेश की, कोई नही मिसाल ---"

इसे माइन - माइन मुंडेर पर तेरी बोल रहा है कागा इस गाने की धून लगाई इस कविता के प्रस्तुतीकरण के समय बच्चों ने अलग-अलग राज्यों का पहनावा परिधान किया संगीत, वादन के साथ विविधता में एकता को दर्शाते हुए ज्ञानवर्धक प्रस्तुतीकरण किया और पाठशाला के अन्य बच्चों, शिक्षकों की वाह-वाही लूटी।

कविता - "सूरज लाने जाना है" यह हिंदी दिन (14 सितंबर को) पर करके दिखाई इसमें

"गलियाँ भूखी सोती है, कुटियाँ अब भी रोती है,
उनको आज हँसाना है, मिलकर कदम बढ़ाना है।"

इन पंक्तियों के समय बच्चों ने 'अंधश्रद्धा निर्मूलन,' 'साक्षरता अभियान', 'नशाबंदी' आदि के पोस्टर लेकर कविता को प्रस्तुत की ताकि गलियाँ, कुटियाँ भूखी न सोए। इसी कविता में "तूफानों के बीच कही, डरकर रुकते वीर नहीं,

गीत प्यार का गाना है, मिलकर कदम बढ़ाना है।"
इन पंक्तियों के समय बच्चे आगे एक्शन, भावपूर्ण गाते हुए कविता कहते हैं और पीछे परदे पर स्लाइड प्रोजेक्टर के माध्यम से बाजीप्रभू, शिवाजी महाराज, झाँसी की रानी आदि की तस्वीरें और झंड़ा दिखाया प्रेक्षक भी भावविभोर हुए। इस तरह अनेक कविताओं को, गानों को रूचिपूर्ण तरीके से पढ़ाया प्रस्तुत प्रार्थना के समय भी कराई जिससे कविताएँ तुरंत और दीर्घकाल तक याद रहेगी।

बारिश से संबंधित कविता बारिश आते समय विशेषतौर पर सीखाई हल्की रिमझिम बारिश में भिगने दिया। कविता बोलवाई जिससे जल्दी आत्मसात हुई बजाए एक ही जगह रोज रटते बैठने के।

पूरक कविताएँ इकट्ठा की। रेड़ियों दूरदर्शन, अन्य किताबों से गाने लिखे। विद्यार्थियों ने संकलित की 'चिड़ियाँ' कविता पर पूरक कविता : खुशी-खुशी से साभार)

"सबसे पहले मेरे घर का
अंडे जैसा था आकार
तब मैं यही समझती थी बस
इतना-सा ही है संसार

फिर मेरा घर बना घोंसला

सूखे तिनके से तैयार --- । इस प्रकार कविता लिखने पर कविता पर प्रश्न दिए -

1) कविता में जो कहा गया है उसका विवरण एक पैराग्राफ में लिखो।

2) चिड़ियाँ अपना घोंसला किन - किन चीजों को जोड़कर बनाती है।

3) यदि तुम चिड़िया होते तो क्या-क्या करते ? पहेली कविता पर बनाओ।

4) निम्नलिखित शब्दों को शामिलकर कहानी लिखो

i) आकाश ii) शाखा iii) पंख iv) घोंसला

5) पहेली करके पूछी जैसे मैं स्वच्छंद हूँ मैं कौन ? उत्तर न आने पर बोल - बोल - बोल नही आता तो घूमजा गोल । इस प्रकार अगले बच्चे को खड़ा कर उत्तर पूछना उसे भी न आ रहा हो तो कहना बता - बता जल्दी बता नही आता तो बता घर का पता जैसे मनोरंजक खेल में कविता के बारे में अध्यापन कराया ।

पत्तों ( कार्डस ) का खेल -

कार्डशीट्स के कार्डस तैयार कर उन पर पाँच - पाँच शब्द लिखना प्रत्येक बच्चें को एक - एक कार्ड बाँटना उस कार्डपर लिखे शब्दों के समानार्थी , विरूद्धार्थी , अनेकवचन लिखने कहना लिखकर आगे के बच्चे का कार्ड लेना ज्यादा-से-ज्यादा कार्ड किसने छुडाऍ पूछना । शाबासी देना ।

पाठशाला में कोई कार्यक्रम जैसे दिन विशेष, जयंती आदि के समय अतिथि की राह देखने के समय, इकट्ठा होने पर शोर मचाते हैं उस समय सामूहिक कक्षा अनुसार कविता सुनाने कहना ताकि शोर नहीं होता है।

अतः कविता का आशय, अनुकूल माध्यम, छात्रों की क्षमता, प्रेरणा इन सब बातों को ध्यान में रखकर अभ्यास कराने से बच्चों में रुचि बढ़ने का योग्य तरीका समझा। तब कविता मानस पटल पर जल्दी अंकित हुई। प्रसिद्ध अभ्यासक मारियान हर्मन ने कहा है कि -

"संगीत, हालचाल, खेल इनका एक समय उपयोग किया तो स्मरणशक्ति बढ़ने और भाषा विकास में उपयोग होता है।"

इसलिए खेल, चित्रकला, गाने, नृत्य आदि के माध्यम से कविता का अध्यापन प्रभावी हुआ। प्रायोगिक समूह का इस प्रकार पढ़ाई लेने से अच्छा परिणाम मिला और बच्चों का गुणात्मक दर्जा बढ़ा। जिस समय प्रायोगिक समूह यह गतिविधियाँ करता है। नियंत्रित ग्रुप ने कक्षा में बैठकर ही अध्ययन किया इन्हें सीधा-सीधा कविता पढ़ाया, गवाया, शब्दार्थ लिखवाए। अर्थ लिखने कहा, स्वाध्याय कराए। पूरक कविता लिखवाई। दोनों ही समूह को समान घटक सीखाए सिर्फ रीति में फरक किया।

कक्षा में सभी विद्यार्थियों के सामने पहली कविता पढ़ी बच्चों से बोलवायी फिर अर्थ समझाया, शब्दार्थ बताए। प्रायोगिक ग्रुप-अ को बाहर भेजा उन्हें पहले ही बताया था कि साभिनय कविता का अभ्यास करना है। केसेट दी। उन्होंने केसेट सुनी दो-तीन बार बोली। हावभाव, अभिनय के साथ प्रयत्न किया। नियंत्रित समूह को अर्थ लिखने के लिए, कविता लिखने के लिए कहा। प्रायोगिक समूह के उपसमूह की कोई मुश्किल बात हो तो वहाँ मदद, निर्देश देकर, नियंत्रित समूह का अध्ययन लिया। आखरी १५ मिनट में प्रायोगिक समूह को खेल कार्ड्स देकर अध्यापन कराया। प्रत्येक कविता पर (अगले घंटे) प्रायोगिक समूह और नियंत्रित समूह की कसौटी परीक्षा ली। प्रथम कविता 'जननी की जय-जय' पर (टेस्ट) कसौटी परीक्षा १५ मार्क्स की ली फिर 'सूरज लाँने जाना' पर १५ गुणों की इसके उपरांत गुणदान दिए।

दूसरी बार अगले घंटे प्रायोगिक समूह के बच्चों को कक्षा में बैठाकर अगली दो कविताएँ परंपरागत पद्धति से (जैसा कि नियंत्रित ग्रुप को सीखाई थी) सीखाई और नियंत्रित समूह को कक्षा से बाहर साभिनय और अन्य गतिविधियों की मदद से (जैसा कि पहले प्रायोगिक समूह को सीखाई थी) अध्यापन कराया। अगले घंटेमेंउनकी कसौटी परीक्षा ली तो आश्चर्यकारक फरक दिखा। मौखिक और लिखित

परीक्षा लेते समय दोनों समूह को समान प्रश्न पूछे गए थे। जाँचने पर "प्रायोगिक समूह" के विद्यार्थियों ने शत-प्रतिशत प्रश्नों के उत्तर सही दिए थे 'नियंत्रित समूह' की तुलना के। साथ ही गुणात्मक दर्जा बढ़ा था।

**कार्यवाही के टप्पे:**

मेरी पाठशाला में सातवीं कक्षा के लिए ४५ मिनट की (कालांश) (तासिका) घंटा मिलता है सप्ताह में तीन दिन। इसके साथ उपक्रम में अन्य गतिविधियों के लिए (जैसे: सस्वर गाने का अभ्यास, वादन, कैसेट टेप करवाना, हस्तपुस्तिका का बाकी बचा काम आदि) शनिवार के दिन आधे दिन की पाठशाला छूटने पर रुककर ½ घंटा नियोजन किया। ग्रंथालय के घंटे में ग्रंथपाल को बताकर एक महीना हिंदी की किताबें ज्यादा इश्यु कराने के बारे में सहमति ली। पाठशाला भरने के समय १०-१५ मिनट जल्दी आकर प्रायोगिक समूह के बच्चे दिखे तो उन्हें बुलाकर सूचना दी जाती थी कि आगे क्या करना है।

**उपक्रम की समय-सारणी:-**

यह उपक्रम शैक्षणिक वर्ष २००५-२००६ के पहले सत्र में लिया। इसके लिए २ महीने की कालावधी लगी १२ जून से १२ अगस्त तक।

१२ जून से २६ जून -- विद्यार्थियों से चर्चा (जिसमें उपक्रम की कल्पना) नियोजन, २ कविता, साहित्य कलाना पूरक कविता

२६ जून से १० जुलाई – पाठ्यपुस्तक की कविता – २, मन की कविता करने देना, हस्तपुस्तिका, टेस्ट, कार्ड्स देना

११ जुलाई से २५ जुलाई – २ कविता (पाठ्यपुस्तक की), प्रश्नावली छुड़ाने देना, कविताओं का प्रस्तुतीकरण, साहित्य बनाना, खेल कार्ड्स देना

२५ से १० अगस्त – कविताओं का पाठशाला में प्रार्थना के बाद सबके सामने प्रस्तुत कराना, टेस्ट

उपरोक्त कालावधि में शालेय समय-सारणी अनुसार सप्ताह में तीन दिन ४५ मिनट के ३ घंटे मिले। शनिवार के दिन आधे दिन की पाठशाला होती है पाठशाला छुटने पर कभी-कभी १/२ घंटे की प्रेक्टिस (प्रायोगिक समूह) और हस्तपुस्तिकाएँ रंगाना, लिखना वगैरह। पूरक कविता की किताबें पढ़ना आदि इस कालांतर में वार्षिक नियोजन में दर्शाएँ अनुसार पाठ्यक्रम भी लिया।

जून से अगस्त १० तक २६ घंटे (४५ मिनट का १ घंटा) मिले जिसमें से १४ घंटे इस उपक्रम के लिए रखे और शनिवार का १/२ घंटा अधूरा काम पूरा करने के लिए।

पाठ्यक्रम की चार कविता सीखाने, चर्चा – ४ घंटे (कालांश)

सस्वर गायन, साभिनय प्रस्तुतीकरण की प्रेक्टिस – २ घंटे

पूरक कविता पर काम, खेलकार्ड्स, मन की कविता के लिए – २ घंटे

कसौटी परीक्षा (टेस्ट) - १ घंटा

हस्तपुस्तिका, पुस्तकालय - २ घंटे

साहित्य बनाना, प्रश्नावली छुडाना, मौखिक टेस्ट - १ घंटा

प्रस्तुतीकरण, और कसौटी परीक्षा - २ घंटा

**उपक्रम का नियोजन और शिक्षक कृती :**

१) इस उपक्रम के लिए पाठशाला की मुख्याध्यापिका की अनुमति ली।

२) संबंधित शिक्षको से चर्चा की।

३) सातवीं के विद्यार्थियों की इस उपक्रम के लिए मानसिक तैयारी की।

४) अभिभावकों से चर्चा कर उपक्रम का महत्व बताया।

५) पाठशाला की ग्रंथपाल से मदद लेना समय-समय पर लगनेवाली संभाव्य किताबों के बारें में, टेप, केसेट के लिए सहमति ली।

६) प्रोजेक्टर के उपयोग के समय संबंधित शिक्षक की मदद।

७) नवोपक्रम का नियोजन करना।

८) विद्यार्थियों को जहाँ कठिनाईयाँ आए वहाँ मदद करना।

९) पूरक कविता ढूँढने में, मन की कविता करने समय मार्गदर्शन करना।

१०) पढ़ाई में पीछे रहे विद्यार्थियों को विशेष प्रोत्साहन देना।

११) प्रोत्साहनपर शब्दों से बच्चों का उत्साह बढ़ाना, प्रशंसा करना।

१२) उपक्रम की गतिविधियाँ चालू रहते समय विद्यार्थी (सहभागी हैं वे) शोर न मचाएँ, दूसरों को परेशानी ना हो इस और सचेत रहना।

१३) हस्तपुस्तिका में कविता, चित्र बनवाना, खेल कार्ड्स बनाना।

१४) प्रोजेक्टर, स्लाइड, टेप, केसेट, किताबों का सावधानी और योग्य तरीके से उपयोग करना।

१५) प्रस्तुतीकरण के समय योग्य निर्देश देना - जैसे पहनावा, अन्य नियोजन जैसे पोस्टर लगना है, तो रंगमंच के पीछे पहले ही लाकर रखे जवाबदार बच्चे को कविता के मंचन के समय पीछे से देने की जिम्मेदारी सौंपना आदि।

१६) उपक्रम से संबंधित सभी व्यक्तियों को सूचना देना

**विद्यार्थीकृती :**

१) अपना उपक्रम समझ लेना।

२) अपनी भूमिका समझना, विचार, चर्चा करना।

३) पूरक कविता संकलित करना।

४) जहाँ नही समझे वहाँ, शंका, प्रश्न पूछना।

५) चित्र बनाने, लिखने, आदि के काम बाँट लेना।

६) अभिभावकों से प्रगति, गतिविधियों के बारे में चर्चा करना।

## कार्यवाही में आयी समस्या कौन-सी? निवारण कैसे किया?

प्रायोगिक और नियंत्रित समूह अलग-अलग तरीके से अलग-अलग जगह अध्यापन कर रहे थे इसलिए पूरे समय चौकस, सतर्क, नियोजनबद्ध तरीके से ही चलना पड़ता था। बच्चें पूरे समय अपने काम में तल्लीन, क्रियाशील रहे इसलिए ध्यान ज्यादा देना पड़ता था। बच्चों को एक-के बाद-एक गतिविधियाँ देनी पड़ी ताकि शोर न हो। सिर्फ शनिवार के दिन ही प्रायोगिक समूह का प्रस्तुतीकरण देखने का समय दिया। इस तरह समायोजन करने से बिना रुकावट के काम होते गए।

## व्याप्ती, और मर्यादा और मूल्यांकन :

1) सातारा जिले के फलटण तहसील में स्थित कमला निंबकर बालभवन इस पाठशाला के 3रा विद्यार्थी लिए।

2) नवोक्रम के लिए घटक महाराष्ट्र राज्य प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा मंडल द्वारा चयनित पाठ्यपुस्तक का अभ्यासक्रम।

3) चार कसौटी परीक्षा (Test) लिए जिसमें प्रायोगिक और नियंत्रित समूह के गुणों की तुलना की।

4) पहली कविता 'आगे बढ़ते जाएँगे' और इक्कीसवीं क्र. की कविता "सूरज लाने जाना है" यह पढ़ाते समय 15 बच्चें प्रायोगिक समूह में थे बाकी 15 नियंत्रित समूह में रहकर अध्ययन कर रहे थे।

अगली दो कविता क्रमांक पाचवें पर

चिड़ियाँ" और क्र. १७ वे की "राहें नई बनाएँगे" पढ़ाते समय शुरू के जो प्रायोगिक समूह में थे उन्हें नियंत्रित समूह जैसा पढ़ाया और नियंत्रित समूह को प्रायोगिक समूह जैसा अध्ययन कराया तो टेस्ट के उपरांत प्रायोगिक समूह का गुणात्मक दर्जा बढ़ा था नियंत्रित समूह की तुलना में।

प्रायोगिक समूह में काम करते समय बच्चों में आत्मविश्वास, अनुशासन, सहयोग भावना, विविध पूरक कविता करने से नए-नए शब्द, जानकारी बढ़ी, मन की कविता करने से, हस्तपुस्तिकाएँ तैयार करते समय बच्चों के कई सुप्त गुणों का पता चला। पूरक किताबें पढ़ने, टटोलने की आदत में बढ़ौतरी हुई। सिर्फ स्वाध्याय न देकर पूरक प्रश्न देने से (जैसे चिड़ियाँ घोंसला किन-किन चीजों से और किस प्रकार बनाती है? इससे कल्पनाशक्ति, निरीक्षण शक्ति बढ़ी। खेल, अंताक्षरी (शब्दों की) खेलने से संघ भावना बढ़ी। काम के दौरान एकाद समस्या आती है, तो उस समस्या का हल वे निकालना सीखे।

* छःमाही (अर्धवार्षिक) परीक्षा में इस पद्धति से कविता छठी, सातवीं, आठवीं, नौवीं और दसवीं (दसवीं के बच्चों की सिर्फ कविताओं पर चाल लगाकर बोलवाई थी) को पढ़ाया तो ९५ फीसदी बच्चों के (रिजल्ट) परीक्षा फल में कविताओं पर आधारित प्रश्नों के उत्तर शत-प्रतिशत सही थे। मेरी

पाठशाला में ६० फीसदी से ज्यादा बच्चें गरीब, पिछड़े वर्ग, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति आदि वर्ग से (मिलाकर) है। इसलिए पढ़ाई की जिम्मेदारी उनकी तैयारी शिक्षकों के दवारा ली जाती है।

उपरोक्त बच्चों को प्रोत्साहनपर शब्दों के साथ रुचि बढ़ाना शिक्षकों के लिए चुनौती का काम है। अत: मेरी रीति, प्रणाली से कविता लेने से उन्हें जुलाई-अगस्त में याद थी। अभिभावकों ने अवगत कराया कि बच्चें घर में बर्तन मांजते समय, झाड़ते समय कविता करते है आदि। इस तरह सीखना यांत्रिक व उबाऊ प्रक्रिया न हुई बल्कि आनंददायी प्रक्रिया हुई। इस उपक्रम से बच्चोंमें निहीत क्षमताओं का विकास किया, विकास का मौका दिया। परीक्षा के समय कविताओं को रटने के काम से दूर थे तनावरहित थे। अंत में कहना चाहुँगी :

" बच्चों को हँसने दो, खेलने दो, हँसते-खेलते सीखने दो, गाने दो, नाचने दो, नाचते-गाते, खेलते, सीखने दो।"